नये प्रोविंशियल का पदस्थापना

फादर जेवियर सोरेंग ने 15 फरवरी को शाम सात बजे अपना पद भार ग्रहण कर लिया। धन्यवादी मिस्सा के आरंभ में सबसे पहले इनफरमरी के नये चार कमरों की आशिष हुई। फादर रंजीत ने प्रार्थना का संचालन किया जब कि फादर जेवियर ने आशिष जल का छिड़काव किया। उसके करीब 230 येसु समाजी और अन्य मेहमान मनरेसा हाउस के बास्केटबॉल मैंदान में जमा हुए जहां एक वेदी बनायी गयी थी। फादर जेवियर लकड़ा असम से और फादर हजारीबाग के प्रोविंशियल फादर फ्रांसिस कुरियन विशेष रूप से यहां आये हुए थे। मिस्सा की शुरूवात फादर रंजीत ने की और अपने उपदेश में फादर अडोल्फो निकोलास के हाल के पत्र का जिक्र करते हुए पूरे येसु समाज की नयी दिशा के बारे में अपनी कुछ बातें रखा। इसके अलावे उन्होंने फादर जेवियर के प्रोविंशियल के रूप में चुना जाने को ईश्वर की विशेष योजना बतायी। अंत मे उन्होंने सबों को धन्यवाद दियां।

धन्यवाद विशेष रूप से ब्रदर हिलारियुस टोप्पो को दिया गया जिसने मनरेसा हाउस में सेवा करते हुए हाल में करीब बीस बरस बिताये। अब इस बुढ़ापे मेंज जब और काम नहीं किया जा सकता तो उन्होंने आराम करने की छुट्टी मांगी। इसी के साथ अब वे येसु समाज के लिये प्रार्थना करने का मिशन ग्रहण कर लिया।

उपदेश के बाद फादर रंजीत ने फादर जेनेरल का जेवियर सोरेंग के नाम पत्र पढ़कर सुनाया और उनकी नियुक्ति की घोषणा की और उनको गले लगा लिया और उनको शुभकामनाएं दीं। इसके बाद के मिस्सा का भाग फादर जेवियर ने जारी रखा। अंतिम प्रार्थना के पहले फादर जेवियर ने अपने ओर से दो शब्द कहे और अपने प्राथमिकताओं को कहा।

मिस्सा के अंत में स्वागत के कार्यक्रम रखे गये थे जिसमें मनरेसा और तरूणोदय के छात्रों ने गीत पेश किया। इसके बाद फादर रंजीत को प्रोविंश के नाम पर फादर अजीत खेस और रंजीत होरो ने धन्यवाद के शब्द कहे। फादर अजीत ने बातों को समेटते हुए हाल में हुए प्रोविंश के कामों का उल्लेख किया। बाद में फादर रंजीत होरो ने स्कोलास्टिकों के नाम पर अलग से धन्यवाद के दो शब्द कहे। अंत में भोज के बाद सबों ने विदा लिया। ब्रदर पोलीकार्प ने बंडा भोज देकर सभी का मन हरा कर दिया।

मार्के की बात थी कि दूर दराज से लोग इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिये आये थे। लोगों के मन में दो भावनाएं थीं, एक धन्यवाद और नये प्रोविंशियल के लिये शुभकामनाओं की। ऐसे कार्यक्रमों में बुजूर्ग येसु समाजियों की भागीदारी देखकर बहुत अच्छा लगा। वे अब जीवन के अंतिम पड़ाव में आ गये हैं फिर भी ऐसे समारोहों में जब सारे येसु संघी एक साथ जुटते हैं तो उनकी भागीदारी महौल को और भी जीवंत बना देती है। एक एक येसु समाजी को परमप्रसाद के लिये लाइन में आते देखकर मेरी आंखों में आंसू भर गये। नजरें उपर उठा कर मैं देख रहा था कि मनरेसा हाउस के कोरिडोर में बीमार और बढ़ापे से लाचार येसु संघी अपने डंडों के सहारे मेरी बातों को सुन रहे थे। मैं उनके प्रति कृतज्ञ था और उनकी प्रार्थनाओं के लिये उन्हें धन्यवाद दे रहा था। ज्रिक तो मैंने सोसो के क्लोइस्टर धर्मबहनों का भी किया जो अपने समुदाय में एक को प्रोविंशियल के लिये प्रार्थना करने के लिये विशेष रूप से नियुक्त किये जाते हैं। मुझे महसूस हुआ कि इन्हीं ताकतों के बल पर हमें बल मिलता है और हम काम कर पाते हैं। प्रार्थना के अलावे जीवन के इन मुकामों में शुभकामनाओं के साथ इतने लोगों को खड़ा देखकर अच्छा लगा, बल मिला और उत्साह भी बढ़ा।

मुझे लगा कि हमारे बीच इतने नौजवान येसु संघी हैं जिन्हें निरंतर मॉडल और प्रेरणाओं की जरूरत होती है। येसु संघ में ऐसे मौकों में शामिल होकर उन्हें लगता होगा कि इस बुलाहट में दम है और आगे काम करने की इच्छा भी बलवती होती होगी।